ISSN 2349-638X
IMPACT FACTOR 4.574

हिंदी साहित्य विशेषांक

भूमंडलीकरण और हिंदी साहित्य

Volume - 5
SPECIAL ISSUE No. 22

AAYUSHI INTERNATIONAL
INTERDISCIPLINARY
RESEARCH JOURNAL
www.aiirjournal.com

मुख्य संपादक
प्रमोद प्र.तांदळे
अतिथी संपादक
डॉ.अरिफ महात

हिंदी साहित्य विशेषांक

भूमंडलीकरण और हिंदी साहित्य

VALUME- 5

SPECIAL ISSUE NO - 22

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal

Impact Factor 4.574 ISSN –2349-638x

UGC Approved Sr.No.64259

अतिथी संपादक

डॉ.अरिफ महात

मुख्य संपादक

प्रमोद प्र. तांदळे

Volume No. 5 Special Issue No.22	भूमंडलीकरण और हिन्दी साहित्य	ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

Sr.No.	Author Name	Research Paper / Article Name	Page No.
1.	डॉ. प्रकाश कृष्णदेव धुमाल	भूमण्ड़लीकरण के परिप्रेक्ष्य में बदलते सामाजिक मूल्य	1 To 5
2.	डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर	भूमंडलीकरण और हिन्दी भाषा	6 To 7
3.	डॉ. भानुदास आगेडकर	वैश्विक संदर्भ में शोषितों का साहित्य: हिंदी नाटक	8 To 12
4.	डॉ. गोरखनाथ किसन किर्दत	भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में बदलते मानवीय मूल्य 'दौड' के विशेष संदर्भ में	13 To 14
5.	डॉ. मीना भंडारी	भूमंडलीकरणः आर्थिक परिणाम और साहित्य (शंकर पुणतांबेकर के विशेष संदर्भ में)	15 To 19
6.	डॉ. बबन शंकर सातपुते	सन्त साहित्य और वैश्वीकरण : मूल्याधिष्ठित सामाजिकताकी प्रत्याशा	20 To 22
7.	प्रा॰ स्मिता मिस्त्री	भूमंडलीकरण और भाषा	23 To 25
8.	डॉ.सरोज पाटील	भूमंडलीकरण से प्रभावित भारतीय युवा वर्ग (उपन्यास 'दौड' के विशेष संदर्भ में)	26 To 28
9.	डॉ .नजमा मलीक	वैश्वीकरण और साहित्य (वैश्वीकरण और समकालीन कविता)	29 To 31
10.	प्रा. हेतल डी देसाई	भूमंडलीकरण और मानवीय मूल्य	32 To 34
11.	आशीष कुमार गुप्ता	आधुनिक हिन्दी कविता का यथार्थः वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में	35 To 36
12.	डॉ.शोभा माणिक पवार	भूमंडलीकरणके परिप्रेक्ष्य मे बदलते सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य (कविताओं के संदर्भ में)	37 To 39
13.	डॉ.शाहीन अब्दुल अजीज पटेल	हिंदी काव्य में भूमंडलीकरण	40 To 42
14.	डॉ. पर्वज्योत कौर	भूमण्डलीकरण और हिन्दी	43 To 46
15.	प्रा. अंजना एल. पटेल	भूमंडलीकरण और बाजारवाद	47 To 50
16.	गणेश ताराचंद खैरे	नासिरा शर्मा के कथा साहित्य पर भूमंडलीकरण का प्रभावः 'संस्कृति' के विशेष संदर्भ में	51 To 53
17.	प्रा.डॉ. संतोष विजय येरावार	भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में बदलते मानवीय मूल्य- विशेष संदर्भ हिन्दी उपन्यास	54 To 56
18.	डॉ. सन्मुख नागनाथ मुच्छटे	भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा का परिवर्तित रुप	57 To 58
19.	प्रा.डॉ.उत्तम लक्ष्मण थोरात	भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में बदलते सामाजिक मूल्य- 'दौड' उपन्यास के विशेष संदर्भ में	59 To 60
20.	प्रा. अशोक गोविंदराव उघडे	भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में बदलते मानवीय मूल्य(मन्नू भंडारी के 'आपका बंटी' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)	61 To 63

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
Volume No. 5
Special Issue No.22
भूमंडलीकरण और हिन्दी साहित्य
ISSN 2349-638x
Impact Factor 4.574

भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में बदलते मानवीय मूल्य- विशेष संदर्भ हिन्दी उपन्यास

प्रा.डॉ. संतोष विजय येरावार
हिंदी विभाग
देगलूर महाविद्यायल, देगलूर

भूमंडलीकरण, बाजारीकरण और निजिकरण नें मानव जीवन और समाज को सर्वांगिन रुप से प्रभवित किया हैं | जिस समाज व्यवस्था और मानसिकता में सकारात्मक एवं नकारात्मक परिवर्तन हो गया हैं | सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षिक राजनीतिक परिस्थितियों, को भी पभावित किया | जहा भुमंडलीकरण ने मनुष्य जीवन को सहज और सरल बनाया तो दुसरी ओर मनुष्य की मानसिकता को विकृत एवं विक्षिप्त भी बनाया |भुमंडलीकरण कारण भौतिक साधनों का पाबल्य, आर्थिक संपन्नता, सुविधाओं की भरमार, वैश्विक मुल्यों की स्थापना, अधिकारों के प्रती सचेतता, रोजगार निर्मिती एवं वैश्विक दुरियों को मिटाने में सहजता आई तो दुसरी ओर मनुष्य को स्वार्थी, विकृत संकुचित, वासनांध, क्रुर एवं पशु बना दिया है | मानव और समाज के इस बदलती मानसिकता को साहित्य में उघाडा गया है | दया, प्रेम, समर्पण, बंधुता, सत्य एवं अहिंसा जैसे मुल्य टुट गए ओर अर्थ केंद्रीत मानसिकता पनपने लगी | मनुष्य को भौतिक सुख साधनों का गुलाम बनाने में तथा मनुष्य की सोच को विकृत बनानें में भुमंडलीकरण नें महत्वुपूर्ण भूमिका निभाई हैं | समाज और मानव के बदलते मुल्य तथा विकृत,घृणित एवं संकूचित मानसिकता को हिन्दी उपन्यास साहित्य में उघाडा गया है |

भुमंडलीकरण से उपजे परिस्थिती नें मानव को संकुचित, विक्षिप्त एवं व्यावहारिक बना दिया तथा | उपभोग की मानसिकता में वृध्दी हो गई है | पब कल्चर,मॉल कल्चर बढने लगा एवं विविध प्रकार के नशाखोरी को प्रतिष्ठा प्राप्त हो गई, मुक्त यौनाचार को स्वतंत्रता के नाम दर बढावा मिलने लगा जिस कारण निराशा, अकेलापन, कूंठा, घटस्फोट, विवाहबाहय संबध, अनैतिकता, चरित्र हिनता, मुल्यहिनता, वासनांध प्रेम एवं अमानवियता जैसी समस्या नें अपनी जडे मजबूत की जिसका चित्रण हिन्दी उपन्यासों में किया गया हैं | भौतिक एवं शारिरिक सुख प्रधान मानसिकता कें कारण परिवार टुट रहे हैं | प्रेम जैसे उदात्त मुल्य मरना सन्न अवस्था में पडा हैं| वासना के बढते प्रभाव नें मनुष्य को नीच, घृनित, चरित्रहिन, व्याभिचारी एवं पशू बना दिया हैं | पती - पत्नी के बीच का विश्वास, समर्पण, सेवा, एवं त्यागभाव समाप्त हो रहा हैं | भौतिक साधनो के चकाचौंध ने और भुमंडलीकरण से ऊपजी अमानवीय होड ने मनुष्य को अंधा बना दिया हैं | प्रेम के बदलते स्वरुप का चित्रण हिन्दी उपन्यासों में प्रचुर मात्रा हुआ हैं | प्रेम के नामपर केवल वासनापुर्ती व्याभिचार, अनैतिक सबंध , मुक्त यौन संबधो को अपनाया जा रहा हैं | इस वास्तविकता को भी उघाडा गया है |

'भगवतीचरण वर्मा ' के 'आखिरी दॉव' उपन्यास में मनुष्य की स्वार्थी वृत्ती एवं कामवासना तृप्ती से उपजी नीचता का चित्रण किया गया है | चमेली पारिवारिक प्रताडना को नकारते हुए छोड रतन सुनारं के साथ भाग जाती हैं रतन चमेली से प्रेम नहिं करता वह तो उसके धन और शरीर को भोगना चाहता है | चमेली के जेवर नशे के लत के कारण बेच देता हैं | जुआ और शराब का आदि रतन चमेली को से हिरालाल को बेचने तक को तैयार हो तैयार हो जाता है | रतन चमेली को सेठ हिरालाल को बेचने तक को तयार हो जाता है | रतन पैसो के लिए अंधा हो जाता है | रतन की तरह 'ऑखरी दाव' उपन्यास का पात्र रामेश्वर भी पैसो के लिए नाजायज तरिके अपनाता हैं | वह कहता है, दुनिया में केवल एक परमेश्वर है- पैसा | उससे भागकर हम लोग जा ही कहा सकते हैं ? हर जगह पैसा स्वामी है पैसा शक्ति है |" भूमंडलीकरण से उपजी अर्थकेंद्रीत मानसिकताने मनुष्य को स्वार्थी एवं लोभी बना दिया | वह पेसो के लिए निचता की सारी हदे लॉघ रहा हैं | हत्या, भ्रष्टाचार, धोखा-धडी, लूट-खसोट, चोरी, अपहरण जैसे नाजायज काम करने से भी मनुष्य हिचकिचा नहीं रहा है | पैसे ने सारे रिश्तो को तोड दिया है | जमीन और पैसो के लिए भाई-अपने भाई का बेटॅं अपने बाप का और पति अपनी पत्नी का वध करने के लिए भी लालायत है |

'शैलेश मटियानी' ने भी अपने 'कबुतरखाना' उपन्यास में मनुष्य की अर्थ पिपासु वृत्ती एवं वासनांध मानसिकता को उघाडा है | सुखी दाम्पत्य जीवन का आधार दोनों में विश्वास, सामंजस्य,समर्पण एवं सच्चा प्रेम हैं परंतु उपभोगी मानसिकता के कारण पति-पत्नी के रिश्ते को खोखला एवं विक्षिप्त बना दिया हैं | मुक्त यौन संबधो की मानसिकता ने भारतीय सुखी परिवारों के दरवाजे में दस्तक दी हैं जिस कारण उदात्त मानवीय मुल्य तार-तार हो गए हैं | रिश्ते एवं परिवार बिखर रहे हैं | सच्चे प्रेम में जहाँ त्याग होता हैं वो वासना में स्वार्थ और लालसा होती हैं | 'कबुतरखाना' उपन्यास का पात्र सेठ करसन भाई अपनी पत्नी

यशोदा बेन से संबध रखने के बजाय अपनी कामवासना तृप्ती के लिए शकुंतला बाई से और दातुन बेचने वालियों से संबंध रखता हैं तो उधर पति व्दारा प्रताडित यशोदा बेन अपने घर के नौकर रामाओं से अपनी दैहिक भूख मिटाती है | तो दुसरी और कामवासना और अर्थवासना में अंधी हो चुकी शारदा रामा दन्तुभाऊ के साथ मिलकर पटेल सेठ की हत्या कर देती है | महानगरों में अंध मानसिकता कों विदेशी संस्कृती नें बढावा दिया है | मुक्त यौन संबधों की बढती मानसिकता ने स्त्री-पुरुषों को पतित बना दिया हैं |

'कबुतरखाना' उपन्यास में मुंबई की सेठानियाँ किस प्रकार स्वच्छंद कामुकता के आदि हो रामा और उस जैसे नौकरों से अपनी शारिरिक भुख को पुरा करती है इस यथार्थ को उपन्यास में उघाडा हैं | "घर की नौकरी होती ऐसी | गरीबों के लडको के लिए हर जगह गड्डे हैं, दोस्त | जुठे बर्तन भी घिसों दिन भर,फिर रात की बीवियों को भी संभालो-बीमार पडके मर जाओ, तो कुत्ता भी सूँघने को नहीं भेजेगा केाई |"[2] रामा जैसे नौकर से महानगरों में सेठोनियाँ अपनी हवस को मिटाती हैं और उधर उनके पति दुसरे स्त्रियों से संबन्ध कायम करत हैं यही वास्तविकता

'शैलेश मटियानी' का 'किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई' उपन्यास भी मनुष्य को तुटते-बिखरते मुल्यों को उघाडाता है | भौतिक सुखों से लैस जिवन बिताने की कामना मनुष्य को विकृत एवं वासनांध बना देती हैं | मानव जहाँ सह जीवन और सहज-जीवन को महत्व देता था मानवता और भारतीय उदात्त मुल्यों को महत्व देता था, वही मानव भूमंडलीकरण से पनपी घृणित एवं कामुक मानसिकता को अपना रहॉ है | भौतिक साधनों के चकाचौंध ने मानव को चरित्रहिन बना दिया है इस उपन्यास की पात्र नर्मदाबेन अपने संसाधनों से प्रेम खरिदती हैं | नर्मदाबेन अपने पति के होते हुए भी बंशीवाला, रामदलार जैसे अनेको के साथ सबध बनाएँ "उसने मंदिर बनवाया पुजारी अपनी पसंद का रखा | उसने अनाथालय खोला, मैनेजर अपनी चाहत का रखा | उसने गर्ल्स स्कुल खुलवाया तो उसका प्रिंसिपल भी अपनी मोहब्बत का भर्ती कर लिया |"[3] नर्मदा बेन अपनी देह वासन को अनेको से मिटाती है | कवी संम्मेलन का आयोजन कि वह इसलिए करती हैं भी वह अनेंको पुरुषों को अपने कामवासना का शिकार बना सके इस यथार्थ मानसिकता को उपन्यास में उघाडा गया हैं |

कुवाँरी माताओं की समस्या भी उपभोगी वासनांध मानसिकता की उपज हैं | विवाहपुर्व संबध रखना मानव पाप और अनीति मानाता वही आज प्रेम के नामपर शारिरिक सुख को हि सर्वस्व मान बैठा है | 'पुनर्जन्म के बाद' उपन्यास में रमाबेन और मनिबेन पात्र ईसी मानसिकता से ग्रस्त है |वे दोनों अवैध संबध प्रस्थापित करते हैं | दोनों बच्चों को जन्म देते है | दोनों मातायें इतनी क्रुर बनती हैं की ओ अपने बच्चों को रामशरन को मारने को भी कहती हैं | बदलते मानवीय मुल्यों ने मनुष्य को पशु बना दिया हैं | एक माँ भी कामवासना के कारण हत्यारी हो सकती है| इस यथार्थ को उपन्यास कार ने उद्घाटीत किया है |

बदलती जीवन पध्दती नें मनुष्य को नशे के आदि बना दिया | पुरुषों के साथ-साथ महिला भी नशक की शिकार होती जा रही हैं | भौतिक साधनों की अती मात्रा एवं आर्थिक संपन्नता ने मानव को अयाश बना दिया है | डॉ. महावरी अधिकारी लिखित 'तलाश' उपन्यास में नलिनी भी मुक्त यौनाचार में सुख तलाशती हैं | शराब पिती है वे किसी भी प्रकारों के बंधनों को नकारती हैं | वे कहती हैं | "मैं औरत नहीं, प्यास हूँ कभी न बुझनेवाली प्यास हू | लोग आए और मुझे छोडकर चले गए तुम भी चले जाओ |"[4] नलिनी मर्यादा को तोडने में ही आनंद मानती है | स्वतंत्रता एवं अधिकारों के नाम पर स्वैराचार को अपनाती हैं यही भुमंडलीकरण की देन है |

'दो मुर्दो के लिए गुलदस्ता' सुरेन्द्र वर्मा का उपन्यास मुंबई के सफेदपोशो और आपराधिक सरगनाओं के कच्चे चिट्ठे खोलती हैं जो यहाँ के वातावरण को विषाक्त, अशांत एवं भयग्रस्त बनाने में लगे है | इस उपन्यास में बढते अपराध और महानगर की बदलती समस्याओं को उघाडा है| महानगरों में पूरुष-वैश्या की समस्या किस प्रकार अपने पैर पसार रहि हैं उसका चित्रण उपन्यास में किया गया है | विलासी मानसिकता,नशोखेरी, अपराधी वृत्ती एवं मुक्त यौनाचार ने मानव को ईतना नीच बना दिया है की वो पैसा कमाने के लिए अपने आप को भी बेच रहा है इस विक्षिप्त मानसिकता को 'दो मुर्दो के लिए गुलदस्ता' उपन्यास में उघाडा गया है | "एक दिन मिसेस दस्तूर जब अपने इंजीनियर मित्र दम्पति के यहाँ बोरीवली अपनी बेटी और उसके बच्चों का हाल - चाल लेने चली गई तभी कुमूद नामक एक महिला का फोन आया कि मिसेस दस्तूर के पास तिब्बती तेल है जिसे लगाने पर दर्द गायब हो जाता है क्या वह तेल की शीशी उसे मिल सकेगी ? नील तेल की शीशी लेकर कुमद के घर स्वयं जाता है | कुमूद अपने फ्लैट में अकेली थी | उसने नील को अपने शयनकक्ष में बुलाया और तेल मलने के लिए कहा | पहले तो नील हिचकिचाया लेकिन कुमूद के जोर देने पर वह तेल उसकी पीठ में मलने लगा | नील कुमूद के हाव - भाव से उत्तेजित होता गया | अंत में कुमूद निर्वसन हो गई और नील को अपने आगोश में लिपटा लिया | नील कुमुद की शारीरिक भूख को मिटाने में जुट गया | चहीं से नील के जीवन में

एक ऐसा बदलावा आया कि वह पुरुष - वेश्या बनने के लिए मजबूर हो गया | कुमुद के बाद ब्लॉसम, यास्मीन, कुतल, स्टेला, रंभा, कृष्ण, सोदामिनी, शिल्पा, करुणा, फ्रांसीसी, स्विस औरतें, कुंतल राव, वेशाली, उर्वशी, पारुल और नैन तक को वह शरीर सुख प्रदान कर अपनी कीमत वसूलता रहा "5

भूमंडलीकरण के कारण मनुष्य यंत्र सदृश्य संवेदनहिन बन गया हैं | अर्थ केंद्रीत व्यवस्था ने मनुष्य की सोंच और चरित्र को बौना बना दिया हैं | मनुष्य से अधिक महत्व भौतिक साधनों को दिया जा रहा हैं जिसे पाने की लालसा के कारण मानव मनोरुग्ण बन रहा हैं | सुबह से लेकर रात तक वह

पैसो के पीछे भाग रहा है | परिवार एवं सबध, रिश्ते-नाते सबको भुलकर वह अंधी दौड का हिस्सा बन रहा है | अशांतता, असामंजस्य अब मानव की प्रवृत्ती बन गई है | महानगरों ने मानव को कठोर, भावहीन एवं खोखला बना दिया है |"महानगरों ने जीविका औरआवास की समस्या में उलझकर व्यक्ति स्वयं को ही भूल बैठा है | तकनीकी अर्थव्यवस्था एवं भीड की राजनिति ने मानवीय सम्बन्धों को मृतप्राय कर दिया हैं | नगरीय जीवन के तनाव एवं संघर्ष ने व्यक्ति को मानसिक रोगी बना दिया है |[6] भौतिक साधनों की चकाचोंध के कारण कुंठा, संत्रास, निराशा, खोखलापन, अजनबीपन, अकेलापन, निर्ममता एवं असंवेदनशीलता को पनपने का मौका दिया हैं | भूमंडलीकरण से उपजी मानसिकताने मनुष्य को विकृत, विक्षिप्त एंव क्रुर भी बना दिया है | अर्थ क्रेदित मानसिकता को बढावा मिला हैं जिस कारण भौतिक साधन मानव से भी अधिका मुल्यवान बन गए है | मानवी मुल्यों को तोडने, मरोंडने और बदलनें का कार्य भी भूमंडलीकरण ने किया है | प्रेम, दया, समर्पण, सत्य, त्याग, बंधुता जैसे उदात्त मानवीय मुल्यों का स्थान स्वार्थ, ढोग, वासनांधता अमानवीयता, चरित्रहिनताऔर बाजारीकरण ने ली है | भूमंडलीकरण के दौर में मनुष्य की पतित और हिन बनने की प्रक्रिया निरंतर चल रही हैं |

संदर्भ :

1) अखिरी दाँव, भगवतीचरणवर्मा पृ. 126
2) कबुतरखाना - शैलेश / मटियानी - पृ. 131
3)किस्सा नर्मदाबेन गंगुबाई, शैलेश मटियानी- पृ 30
4) तलाश, महावीर अधिकारी पृ. 123
5) हिन्दी उपन्यासों में प्रति बिंबित महानगर डॉ. बरसाती जगबहादूर पृ. 89
6) समकालीन हिन्दी उपन्यास महानगरीय बोध सीमागूप्ता पृ.51